Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

अज्ञेय की कविताओं में सामाजिक जीवन

डॉ.बिक्कड अभिमन्यु
हिन्दी विभागाध्यक्ष
राष्ट्रमाता इंदिरा गांधी, कला, वाणिज्य
व विज्ञान महाविद्यालय ,जालना.
मो.नं. ९४२१३०७७०६
bikkad.abhimanu@gmail.com

अज्ञेय हिन्दी साहित्य के प्रतिभा संपन्न कवि है। उनका नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायनजी है। ६ मार्च १९११ में कसिया गॉव जिला देवरिया की भुमि में अज्ञेय का जन्म हुआ। उनका एक साधारण परिवार था। उनके परिवार की अर्थिक स्थिती ठीक नहीं थी। उनके दादा संस्कृत के ज्ञानी थे। उसी से उनकी आरंभिक शिक्षा संस्कृत में हुई । पिताजी की नौकरी के कारण इन्हें भारत भ्रमण का मौका मिला।उन्हें उसमें अच्छे बुरे अनुभव आये। इसका अज्ञेयजी को अपने साहित्य सृजन के लिए उपयोग हुआ। उनका समग्र साहित्य ही भोगा हुआ यथार्थ जीवन है।

अज्ञेय की बचपन से ही साहित्य लेखन में रुचि थी। ' यियाग्रा प्रताप' में लिखी एक कविता से पिता को बक्षिस के रुप में पाँच रुपये मिले थे। अज्ञेय जी ने आगे चलकर अनेक पत्र पत्रिकाएँ, पुस्तके, तारसप्तक का संपादन किया। अज्ञेय एक कवि, कथाकार, नाटककार, कहानीकार, निबंधकार, आलोचक तथा साहित्य चिंतक, डायरी, लेखन, यायांवर, संस्मरण, संपादक, भूमिका लेखक, आदि के रुप में जाने जाते हैं। बच्चपन से ही कवि के रुप में अज्ञेयजी को जाना जाता है। अपने जीवानुभव और वातावरण, परिस्थिती के आधारपर उन्होंने बहुत सारी कविताएँ लिखी । उनके कुछ कविता संग्रह संकलित है जिसमें 'भग्नदुत, चिंता, इत्यलम, हरी घास पर क्षणभर, बाबरा अहेरी, इंद्रधनुष रौंदे हुए थे, अरी ओ करुणा प्रभामय, आंगन के पार दार अदि।

अज्ञेय की शिक्षा आरंभ में संस्कृत में हुई। परंतु उसके आगे उन्होंने फारसी और अंग्रेजी में शिक्षा पायी। परंतु अधिक मात्रा में उनका झुकाव हिन्दी की ओर रहा। इनके साहित्य में संस्कृत के साथ फारसी अंग्रेजी के शब्दों का हिन्दी भाषा में प्रयोग किया है। उनको अनेक साहित्यकारों की प्रेरणा मिली जिसमें निराला, महादेवी वर्मा, रामधारीसिंह दिनकर, हरिवंशराय बच्चन, प्रेमचंद, जैनेंद्र आदि। उनका व्यक्तित्व बहु आयाजी रहा है। इसका मूल्यांकन करना असंभव है परंतु उनके कविता साहित्य में सामाजिक जीवन चित्रित हुआ है।

साहित्य और समाज की स्वतंत्र कल्पना नहीं है। इनका एक दुसरों के साथ घनिष्ट संबंध है। डॉ. नगेंद्र कहते हैं- "साहित्य अपने व्यक्त या मूर्त रुप में रचना अथवा कृति है। किंतु अव्यस्त रुप में कृति के पीछे कृतिकार का व्यक्तित्व और कृतिकार के व्यक्तित्व के पीछे उसका सामाजिक परिवेश के साथ अनिवार्य रुप कों जुडा हुआ है।" कवि समाज की पुकार है। कवि समाज के भावों को दिशा देता है।

हिन्दी साहित्य में प्रयोगवाद और नई कविता का अपना एक विशिष्ट स्थान है। समर्थक और प्रवर्तक के रुप में अज्ञेयजी की ओर देखा जाता है। कवि की एक जैसी विचारधारा हमेशा नहीं रहती समय के साथ उसमें बदलाव आता है। जिसमें कवि का सामाजिक जीवन दिखाई देता है। इंद्रधनुष रौंदे हुए ये कविता में स्वयं अज्ञेयजी ने अपने आपको समाज सा प्रतिनिधि माना है। वह इस प्रकार से -

"मैं प्रतिभू हूँ, मैं प्रतिनिधी हूँ, मैं संदेश वाहक हूँ।"

अज्ञेय ने कहा कि जिस प्रकार से सूर्य अपने प्रकाश से सारी वस्तुओं को प्रकाशमान करता हैं। उसी तरह से वे अपने कविता के माध्यम से समाज को आनंदित करना चाहते हैं। वह इस प्रकार से

"मै सेतु हूँ,
जो है और जो होगा दोनों को मिलता हूँ।"

अज्ञेय जी को देश की आजादी के पूर्व जो परिस्थितियाँ थी वही देश आजाद होने के बीस साला बाद भी वही स्थिती नजर आती है। वह इस प्रकार से -

"सोलह पुंजी हॉ कह लो कलाएं पर चोरी चापलूसी,
सेंध मारना, जआखोरी ललोपलो और लंबारियत,
ये सब पारस्परीक कलाएँ थी आजादी के बीस बरस क्यों,
बीस पीढी, पढते की"

भारत एक समृद्ध देश है, यहाँ की जमीन, खेत खलिहान, पर्वत, नही सबकुछ समृद्ध है परंतु देशवासी गरीब है। वह इसप्रकार से -

"हरे भरे हैं खेत,
मगर खलिहान नहीं;
बहुत महतो का मान ,
मगर दो मुट्ठी धान नहीं।
भरी हैं आँखे
पेट नहीं
भरे हैं बनिये के कागा
टेंट नहीं।"

देश का किसान खेती उपजता है, लेकिन उनका माल कम दामों में महतो और बनिये खरिदकर शोषण करते हैं। दूसरी ओर धन के अभाव में पेठ भरने के लिए गरिबों की जमीन आदि सब झूठे कागज बनार बनियें ने अपने नाम कर लिए है। अज्ञेयजी की नारी के प्रतिभी सहानुभुति दिखाई देती है।

अज्ञेय की कविता में पापड बेलनेवाली, बीडी कामगार, बासन माँजनेवाली स्त्रियाँ, रुई धुननेवाली, रिक्षा चलानेवाला आदि के प्रति कवि की संवेदना गहराई के साथ उभरी है, वह इस प्रकार से -

"पीडित, श्रमरत मानव
अविजित दुर्जेय मानव कर्मकर,
श्रमकर, शिलपी, स्जष्टा
उसकी मैं कथा हूँ।"

सत्ताधारी और शासकों की बेरहमी और दीनों के प्रति उदासिनता दिखाई देती है उसे व्यंग्य के साथ देखे-

"भीतर जलने लाल था तुके साथ
कमरों की दुसाध्य विषमताएँ भी
तप्त उबलती जाती है।"

कविने औद्योगिक वस्ती में रहनेवाले लोगों का जीवन भी चित्रित किया है, उसी तरह से कवि ने प्रतीकों के माध्यम से शोषक और शोषितों को प्रस्तुत किया है। वह इसप्रकार से-

" रेत का विस्तार
नदी जिसमें खो गयी
कृश धार "

जिस तरह रेत नदी के जल को खिच लेती है, उस नदी का अस्तित्व नष्ट कर देती है उसी प्रकार समाज में पुंजिपति गरीबों का शोषण करते हैं। उनका खूण चूसते है। रहता है केवल हड्डियों का डाच्या। सत्य को समझकर कविने नारी के अलग अलग (६) रुपों को चित्रित किया है। कवि नारी के शोषण विरोध करते हुए वैश्यावृत्ती को इस प्रकार चित्रित करते हैं।

"ओट खडी खम्भे के अंधियारे में चेहरे की मुर्दनी छिपाये थकी उँगलियो से ऑखो से रुखे बाल हटाती। लट की मैली झालर के पीछे से बोलेगी दया किजिए, जंटिलेमैन।"

कविने नगरवासियों की स्वार्थी प्रवृत्तियों को सांप की तरह माना है। वह इसप्रकार से-

"साँप,
तुम सश्य तो हुए नहीं
नगर में बसना
भी तुम्हे नहीं आया
एक बात पुछूँ..(उत्तर दोगे)
तब कैसे सीखा हँसना विष कहाँ पाया।"

अज्ञते यंत्रवत मानव का जीवन देखा और उसके प्रति तोखा व्यंग्य किया है।

उपसंहार :

अज्ञेय प्रयोगवाद के समर्थक एवं नयी कविता के प्रवर्तक भले ही हो, लेकिन उनके भाग्य में, सामाजिक जीवन का दर्शन होता है। स्वयं अज्ञेयजी ने संकेत रुप से प्रतिवादियों की सामाजिक जीवन विषय में लिखा है कि, यह जीवनमात्र उसकी बपौती नहीं है।

संदर्भ :

१. अज्ञेय की भाग्य चेतना- डॉ. कृष्ण भावुक।
२. इंद्रधनुष रौंदे हुए थे- अज्ञेय।
३. बावरा अहेरी - अज्ञेय।
४. हरी घासपर क्षणभर- अज्ञेय।
५. आधुनिक हिन्दी कवित प्रसाद से अज्ञेय तक-विश्वनाथ प्रसाद तिवारी।
६. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना डॉ.सोफिया मैथ्यु
7. नयी कवित के प्रमुख हस्ताक्षर- संतोषकुमार तिवारी।
8. प्रगतिवादी काव्य साहित्य -डॉ. कृष्णालाल हंस।